कोटा। वीएमओयू यूनिवर्सिटी के साथ ब्रह्माकुमारीज मूल्य एवं आध्यात्मिक पाठ्यक्रम की शुरूआत करते हुए वाइस चांसलर डॉ.विनय कुमार पाठक, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.ओमप्रकाश तथा अन्य।

काठमाण्डु। जिला न्यायधीशों के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात ब्र.कु.राज दीदी तथा ब्र.कु.कुसुम समूह चित्र में।

फतेहपुर-यू.पी.। मातेश्वरी जगदम्बा के स्मृति दिवस पर माल्यार्पण करते हुए करन सिंह पटेल, पूर्व अध्यक्ष भाजपा साथ में उनकी धर्मपत्नी शान्ति देवी, ब्र.कु.नीरू तथा अन्य।

गोण्डा (उ.प्र.)। सुप्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.दिव्या।

हरदोई-यू.पी। नये उप सेवाकेन्द्र के उद्घाटन पर अध्यक्ष मुकेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रोशनी।

सिविल लाइन-कटनी। 'स्वस्थ्य भारत' कार्यक्रम में उपस्थित इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ.सुब्बाराव, डॉ.ज्योत्सना निगम, डॉ.बी.आर.पंजवानी, डॉ.के.पी.श्रीवास्तव, सिविल सर्जन डॉ.दिनेश बरौड़ा,डॉ.एस.पी.सोनी, संजय तिवारी व ब्र.कु.लक्ष्मी।

दुनिया को बनाना ...

-पेज 1 का शेष

प्रिय आत्माएं प्रिय संतान हैं। हम सभी साधना इसलिए करते हैं कि हमारा आंतरिक संबंध परमपिता परमात्मा से सदैव बना रहे। बच्चे तो पिता को याद करते ही रहते हैं मगर इसके लिए कोई साधना करने की जरूरत नहीं होती। साधना करने की जरूरत तब होती है जब पिता का परिचय स्पष्ट रीति से मालूम नहीं होता है। उनकी स्पष्ट पहचान यह है कि वह निराकार है, प्रकाश रूप है और अशरीरी है। हम आत्माएं इस सृष्टि रंग मंच पर अनेक शरीरों के माध्यम से विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। अपने वायदे अनुसार परमात्मा फिर से भारत भूमि पर आये हैं और हमें हमारा सत्य आत्मिक परिचय देकर हमारे अंदर फिर से देवत्व प्रतिष्ठापित कर रहे हैं। अब इस बात को समझ कर हमें अपने जीवन का कल्याण करना है। अपने घर को ही आश्रम बनाना है। जीवन को विकार मुक्त बनाना है। परमात्मा इस कार्य में हमारी मदद कर रहे हैं।

धार्मिक सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.मनोरमा ने कहा कि मानव जीवन की समाप्त प्राय मुस्कान को फिर से उनके चेहरों पर लाने के प्रयास रुप इस सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। संगठित होकर हम संसार को स्वर्ग बना सकते हैं, विभाजन के नाम पर संसार नर्क बना है। दिल के दरवाजों को खोलिये और जगत नियंता के इशारों को उसमे प्रविष्ट होने दीजिए।

कर्नाटक से पधारे भाई वसवमूर्ति स्वामी जी ने कहा कि ईश्वरीय विश्वविद्यालय अति उत्तम सेवा कर रहा है। हम इनके साथ हैं। इसका लाभ भारत के हर एक कोने में फैलना चाहिए।

नागपुर से पधारे फादर फालसेन ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की ओर से इस आध्यात्मिक सम्मेलन में भाग लेकर मैं काफी प्रसन्न हूँ। हमे इसका लाभ अवश्य मिलेगा। यह विषय सामयिक है। हम सब यहाँ एक आध्यात्मिक उल्लास एवं चेतना से सराबोर होंगे ऐसा विश्वास है।

बीदर से पधारे ज्ञानी दरबार सिंह जी ने कहा कि यहाँ की व्यवस्था बहुत सुंदर है। हमें परमात्मा की गोद तभी प्राप्त होगी जब हम माँ समान इन ब्रह्माकुमारी बहनों की बात पर विश्वास करके बुराईयों को छोड़ेंगे। इनकी बातों को समझकर जीवन को श्रेष्ठ बनाओ।

धार्मिक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.रामनाथ ने कहा कि सारा विश्व इन्हीं त्यागी, तपस्वी, संतों, महंतों, साध्वियों एवं माताओं की आध्यात्मिक शक्ति की वजह से भारत को विश्व का गुरु मानता है। एक वक्त था जब भारत स्वर्ग भूमि थी मगर आज नर्क बन गया है। यह आध्यात्मिक ज्ञान की कमी की वजह से हुआ है। ब्र.कु.कुंती ने कुशल मंच संचालन किया। कुमारी अनन्या ने स्वागतार्थ तांडव नृत्य किया।

मतमतांतर भुलाकर ..

-पेज 12 का शेष

इतनी बड़ी लहरें हैं कि हम इस परमात्म-शक्ति से सम्पन्न स्थान के साथ जुड़कर भवसागर पार हो सकते हैं। ज्ञान रूपी झाड़ू लेकर अपने हृदय रुपी घर से विकारों रूपी कूड़े को बाहर फेंक दो और यही इस स्थान का मिशन है। जैसे ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का पवित्र सफेद चोला है ऐसे हम भी बेदाग हो जाएं ताकि हमारा जीवन सफल हो जाए। मैं यहां से एक खुशी की लहर लेकर जा रहा हूँ और जाकर बताऊंगा कि आपको श्रेष्ठ जीवन बिताना है तो ब्रह्माकुमारी संस्था के ऊसूलों को अपना लो।

स्वामी शास्वतानंद जी महाराज, अखण्ड परमधाम आश्रम अमरावती ने कहा कि भारत कब इंडिया बन गया वो पता ही नहीं चला। प्राचीन भारत की संस्कृति, शिष्टाचार और संस्कार की झलक मुझे ब्रह्माकुमारी बहनों में दिखाई दे रहे हैं। यहाँ आकर मुझे परमशांति की अनुभूति हुई है जिसे लेकर मैं यहां से जाऊंगा।

माताजी नंदाताई, ककैया मठ, जमखण्डी ने कहा कि यहां चल रहे सभी विचार देव लोक के विचारों के जैसे थे इसलिए मुझे देवलोक यहीं पर दिखाई दे रहा है। जहां अपनापन है, करूणा है, प्रेम है, दया है, वह सचमुच स्वर्ग है। इस परिसर की सुबह मन को बहलाने वाली थी और इस परिसर में बहुत अच्छा वातावरण मिला है। यह विश्व विद्यालय एक घर है जहां दिव्य शक्तियों का निर्माण हो रहा हैं और आगे भी होता रहेगा। जब मैं यहाँ आई थी तो संस्था के प्रति नकारात्मक विचारों के साथ आई थी परंतु मैंने वो नकारात्मक विचार डिलीट कर दिया और अब मै यहाँ से समारात्मक विचारों को लेकर जा रही हूँ।

दु:ख नहीं, सुख का निर्माण करें

प्रश्न:- मुझे पता था ये करने से मेरे माता-पिता को खुशी मिलेगी। ये विचार तो मेरे साथ ही रहा कि और इसलिए मैंने इसे किया। तो इसमें फिर बुरा क्या है?

उत्तर:-आपने किसी कार्य को या किसी चीज को एक बार अपना बना लिया तो फिर आपके माता-पिता उस समीकरण से बाहर हो जाते हैं। आपने जो निर्णय लिया अपनी लाइफ में चाहे वो कैरियर का है, चाहे वो आपके संबंधों का है फिर उसकी जिम्मेवारी आपकी हो जाती है, चाहे आप उसमें सफल हों या नहीं।

मैं एक ऐसे भाई को जानती हूँ जिनका एक लड़की के साथ अच्छा संबंध था। लेकिन उसकी माँ उसे पसंद नहीं करती थी। भले उनके बीच का संबंध प्रगाढ़ था लेकिन अपने माता-पिता की खुशी के लिए उसने उसे छोड़ दिया। ऐसा आजकल बहुत सारे बच्चों के साथ होता है। अब भले वो दूसरी तरफ सेट भी हो जाते हैं उसकी कहीं और शादी भी हो जाती है। लेकिन वो खुश नहीं होता है क्योंकि उसके मन के अंदर यही सोच होती है कि ये सब मैंने अपनी माँ की खुशी के लिए किया। फिर वो लड़का सोचता है कि मैंने ये सही किया या नहीं किया, लेकिन मेरी खुशी तो वहां थी। और यही विचार उसके मन में बार-बार आती रहती है कि ये मैंने अपने माता-पिता की खुशी के लिए.... । इससे क्या होता है कि जितना समय वो विचार आपके मन में रहेगा आप दु:ख में रहेंगे। और फिर वो आपके संबंधों में, आपके माता-पिता के साथ, कभी न कभी तो वो सारा बाहर निकल ही आयेगा कि ये मैंने अपनी खुशी के लिए नहीं बल्कि आपकी खुशी के लिए किया। तो इससे हमारे संबंधों पर कितना गहरा असर पड़ता है।

-ब्र.कु.शिवानी

प्रश्न:- मेरी अपेक्षायें उनसे इतनी ज्यादा हो जाती है कि मैं उनकी खुशी की परवाह भी नहीं कर पाती हूँ?

उत्तर:- विशेषकर अगर मैंने आपके लिए कुछ किया ये सोचकर किया कि कभी आप भी मेरे लिए करेंगे। अगर आपने नहीं किया तो मैं कहूंगा ना कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और मेरी लिस्ट तो मानस पटल पर हमेशा तैयार होती ही है कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और आपने क्या किया। ऐसा यह बहुत करके व्यवसायिक संबंधों में होता है। फिर तो वो खुद भी दर्द में रहेंगे, माता-पिता के साथ जो उर्जा विनिमय(आदान-प्रदान) होगी वो भी दर्द वाला, फिर आप जिस भी नौकरी में या जहां भी आपके रिश्ते जुड़े होंगे, वहां भी लोग दु:ख में रहेंगे। और ये सब इसलिए हो रहा था कि मुझे माता-पिता को खुशी देनी है। इतना सारा दु:ख-दर्द क्रियेट करके क्या आप माता-पिता को खुशी दे पायेंगे? नहीं। थोड़ा समय लो अपने आपको समझाओ कि उन्हें खुशी देना यह हमारा निर्णय है।

ये जो अपेक्षायें हम रखते हैं और उसे पूरा करने के प्रयास में जो सारा दिन लगे हुए हैं। ये भी हमारी स्थिति को ऊपर-नीचे करता है। एक है आप अपेक्षा भले रखो, क्या आप ऐसा करेंगे या नहीं करेंगे, लेकिन मेरी खुशी उस पर निर्भर नहीं है। उससे क्या होगा आप अपेक्षा रखेंगे लेकिन अगर वो पूरी नहीं हो पायी तो आप दु:खी नहीं होंगे।

सारी प्रतिक्रिया तब आती है जब हम दु:खी हो जाते हैं। उस समय तो अपेक्षा अलग हो जाती है। लेकिन मैं दु:खी हो गयी तब मैं प्रतिक्रिया करती हूँ। अगर मैं दु:खी नहीं हुई तो प्रतिक्रिया नहीं करूंगी, यदि प्रतिक्रिया नहीं करूंगी तो आपको सशक्त करूंगी। बच्चे को अगर परीक्षा में 90 प्रतिशत नंबर नहीं मिला, लेकिन अगर मैं दु:खी नहीं हुई, गुस्सा नहीं किया तो मैं उसे स्वीकार करूंगी, उससे प्यार से बातें करूंगी ताकि वो अगली बार इससे अच्छा प्रदर्शन कर सके। यदि मैं गुस्सा होकर बोलूं कि हम तुम्हारे ऊपर इतनी मेहनत इसलिए करते हैं कि तुम हमारी अपेक्षाओं को पूरा नहीं करो। हमारी यह भाषा उसे उत्साहित नहीं करती है बल्कि उसे और ही हीन भावना से ग्रसित कर देती है। हम बहुत बार कहते तो थे लेकिन समझ नहीं पाते थे कि हमारी अपेक्षा कितनी बढ़ गयी है और मुझसे जो अपेक्षा हैं उसे पूरा करने के लिए हम कितने तत्पर रहते हैं।